विश्व न्याय मन्दिर

30 दिसंबर 2021

महाद्वीपीय सलाहकारों के
मण्डलों के सम्मेलन को संबोधित

परम प्रिय मित्रों,

इस वर्ष रिजवान में हमने वर्णन किया कि कैसे, एक चौथाई सदी के दौरान, बहाई विश्व एक ऐसे रूपान्तरण से गुजरा जिसने उसे सीखने, विकसित होने और मानवता की सेवा करने की एक अकल्पनीय क्षमता प्रदान की। लेकिन, इस काल की उपलब्धियां कितनी भी उज्ज्वल हों, इसे आने वाली उपलब्धियों की छाया तले ही रहना होगा। हाल ही में शुरू की गई योजनाओं की नई श्रृंखला के समापन तक, बहाई समुदाय को ऐसी क्षमताएँ अर्जित करने की आवश्यकता होगी जिन्हें वर्तमान में शायद ही देखा जा सकता है। आने वाले दिनों में अपने विचार-विमर्श में, आप इस बात का पता लगाने में व्यस्त रहेंगे कि इस तरह के सुदृढ़ समुदाय को बनाने के लिए क्या आवश्यक है।

बहाउल्लाह कहते हैं कि "जिस उद्देश्य के लिए नश्वर मानवों ने, पूर्ण शून्यता से, अस्तित्व जगत में कदम रखा है, वह यह है कि वे दुनिया की बेहतरी के लिए काम कर सकें और एक साथ एवं सद्भाव में रह सकें।" उन्होने ऐसी शिक्षाएं प्रकट की हैं, जो इसे संभव बनाती हैं। एक ऐसे समाज का निर्माण करना जो सचेतन रूप से इस सामूहिक उद्देश्य हेतु काम करता है, न केवल इस पीढ़ी का, बल्कि आने वाली अनेक पीढ़ियों का काम है, और बहाउल्लाह के अनुयायी उन सभी का स्वागत करते हैं जो इस उपक्रम में उनके साथ परिश्रम करते हैं। इसका अर्थ है सीखना जीवंत, बाहयमुखी समुदायों का निर्माण करना; इसका अर्थ उन समुदायों से है जो सीख रहे हैं आध्यात्मिक और भौतिक प्रगति करना; इसका अर्थ है उन संवादों में योगदान करना जो इसकी उन प्रगति की दिशा को प्रभावित करते हैं। प्रयास के ये क्षेत्र, स्वाभाविक रूप से, परिचित हैं। एक दृष्टिकोण से देखा जाए तो वे काफी भिन्न हैं, प्रत्येक की अपनी विशेषताएं और अनिवार्यताएं हैं। फिर भी वे सभी मानव आत्मा में अंतर्निहित ऊर्जा को जगाने और उन्हें समाज की बेहतरी की ओर प्रवाहित करते हैं। एक साथ, वे वह निर्मुक्त करने के साधन हैं जिन्हें संरक्षक ने प्रभुधर्म की "समाज-निर्माण शक्ति" के रूप में वर्णित किया है। बहाउल्लाह के प्रभुधर्म द्वारा धारित में निहित यह अंतर्निहित शक्ति मानवता की सेवा करने और ईश्वर के शब्द को बढ़ावा देने के एक बहाई समुदाय के नवोदित प्रयासों में भी दिखाई देती है। और यद्यपि उनके प्रकटीकरण में प्रतिबिम्बित विश्व समाज निश्चित रूप से बहुत दूर है, फिर भी जो समुदाय उनकी शिक्षाओं को अपनी सामाजिक वास्तविकता पर लागू करना सीख रहे हैं, समृद्ध होते हैं। कितनी धन्य हैं, इस दिन की महानता और अपने कार्यों के महत्व से सजीव आत्माएँ, जो दिव्य शिक्षाओं से आकार प्राप्त करने वाले समाज के उदय के लिए प्रयास करती हैं।

वैश्विक योजनाओं की श्रृंखला जो रिजवान में प्रारम्भ हुई, पूरे पच्चीस साल तक चलेगी। यह प्रभुधर्म की नौका को बहाई युग की तीसरी शताब्दी में ले जाएंगी और रिजवान 2046 में समाप्त होंगी । इस अवधि के दौरान, बहाई विश्व एक ही उद्देश्य पर केंद्रित होगा: प्रभुधर्म की समाज-निर्माण शक्ति की सदैव बढ़ती मात्रा में निर्मुक्ति। इस समग्र उद्देश्य के प्रयासों के लिए अनुयायी, स्थानीय समुदाय और प्रभुधर्म की संस्थाओं की क्षमता में और अधिक वृद्धि की आवश्यकता होगी। योजना के इन तीन स्थिर नायकों में से प्रत्येक को एक भूमिका निभानी है, और प्रत्येक में क्षमताएं और गुण हैं जिन्हें

अवश्य ही विकसित किया जाना चाहिए। हालांकि, प्रत्येक अपने बलबूते पर इनकी पूरी क्षमता को प्रकट करने में असमर्थ है। एक दूसरे के साथ अपने गतिशील संबंधों को मजबूत करने से ही उनकी शक्तियां संयुक्त और गुणित होती हैं। अब्दुल-बहा स्पष्ट करते हैं कि लोगों द्वारा सहयोग और पारस्परिक सहायता के गुण जितने अधिक प्रकट होंगे, "मानव समाज उतना ही प्रगति और समृद्धि में अधिक विकास करेगा "; प्रभुधर्म में, यह सिद्धांत व्यक्तियों, संस्थाओं और समुदायों की अंतःक्रियाओं को विशिष्टता तथा आकार प्रदान करता है, और यह प्रभुधर्म के निकाय को नैतिक बल और आध्यात्मिक स्वास्थ्य से संपन्न करता है।

योजना की प्रक्रियाओं के माध्यम से जागृत की जा रही आत्माएं बहाउल्लाह की शिक्षाओं- "प्रत्येक रोग का संप्रभु उपचार" की लगातार और अधिक गहन समझ हासिल करने और उन्हें अपने समाज की आवश्यकताओं के लिए लागू करने की कोशिश कर रही हैं। यह मानते हुए कि व्यक्तियों का कल्याण व्यापक समाज के कल्याण में निहित है, वे सभी की समृद्धि के लिए प्रतिबद्ध हैं। वे निष्ठावान नागरिक हैं जो पक्षपाती और सांसारिक सत्ता की होड़ से दूर रहते हैं। इसके स्थान पर, वे मतभेदों से ऊपर उठने, दृष्टिकोण में सामंजस्य स्थापित करने और निर्णय लेने के लिए परामर्श के उपयोग को बढ़ावा देने पर केंद्रित रहते हैं। वे विश्वासपात्रता, सहयोग और सहनशीलता - जैसे गुणों और अभिवृत्तियों पर जोर देते हैं-जो कि एक सुस्थिर सामाजिक व्यवस्था के निर्माण खंड हैं। वे मानव प्रगति के लिए आवश्यक तर्कसंगतता और विज्ञान के समर्थक हैं। वे सहिष्णुता और समझ की वकालत करते हैं, और मानवता की अंतर्निहित एकता को अपने मन-मस्तिष्क में सर्वोपरि रखते हुए, वे सभी को सहयोग करने हेतु एक संभावित साझीदार के रूप में देखते हैं, और वे उन समूहों के बीच भी सहचर-भाव को बढ़ावा देने का प्रयास करते हैं जो भले ही परंपरागत रूप से एक दूसरे के प्रति शत्रुतापूर्ण रहे हों। वे इस बात के प्रति सजग हैं कि भौतिकवाद की ताकतें उनके चारों ओर कैसे काम कर रही हैं और विश्व में व्याप्त अनेक अन्यायों के लिए उनकी आंखें खुली हुई हैं, तथापि वे एकता की रचनात्मक शक्ति और मानवता की परोपकारिता की क्षमता के बारे में समान रूप से स्पष्ट हैं। वे हृदयों को रूपांतरित करने और अविश्वास को दूर करने वाली उस शक्ति को देखते हैं जो सच्चे धर्म में निहित है, और इसलिए, भविष्य में विश्वास रखते हुए, वे उन परिस्थितियों को विकसित करने के लिए श्रम करते हैं जिनमें प्रगति प्राप्त हो सकती है। वे प्रत्येक आत्मा की चेतना की स्वतंत्रता का सम्मान करते हुए, अपने विश्वासों को उदारतापूर्वक दूसरों के साथ साझा करते हैं, और वे कभी भी अपने स्वयं के मानकों को किसी पर नहीं थोपते हैं। वे यह दिखावा नहीं करते कि उन्होंने सभी प्रश्नों के उत्तर खोज लिए हैं, वे इस बारे में स्पष्ट हैं कि उन्होंने क्या सीखा है और उन्हें अभी क्या सीखना है। उनके प्रयास कार्य और समीक्षा की क्रमिक लय में बढ़ते हैं; असफलताएं उन्हें अचंभित नहीं करतीं। उन स्थानों में जहां बढ़ती संख्या इस प्रकार के समुदायों के निर्माण में मदद कर रही है, लोगों के सामाजिक अस्तित्व के साथ-साथ उनके आंतरिक जीवन को बदलने की प्रभुधर्म की शक्ति बढ़ती तीव्रता से दिख रही है। हमें विश्वास है कि योजना के केंद्रीय उद्देश्य के प्रति गंभीरता से प्रयास करने से ऐसे अनेकानेक समुदायों का उदय होगा।

क्लस्टरों का अभिगमन

प्रभुधर्म की समाज-निर्माण शक्ति की एक बड़ी अभिव्यक्ति हेतु सर्वप्रथम और सबसे महत्वपूर्ण आवश्यकता है, विश्व के प्रत्येक भाग में समूहों द्वारा प्रवेश की प्रक्रिया में अभी और आगे बढ़ना। बहाउल्लाह के प्रकटीकरण के प्रकाश को और अधिक व्यापक रूप से फैलाने और समाज की मिट्टी में प्रभुधर्म की जड़ों को और अधिक गहराई तक पहुँचाने के आध्यात्मिक उद्यमों के मापने योग्य परिणाम होते हैं: क्लस्टरों की संख्या जहां विकास का कार्यक्रम शुरू किया गया है और सघनता का वह अंश जिस तक प्रत्येक पहुँच गया है। दोनों प्रकार के माप के संबंध में अब तेजी से आगे बढ़ने के साधन मौजूद हैं। वैश्विक योजनाओं की वर्तमान श्रृंखला के दौरान महानतम नाम के समुदाय को जिस लक्ष्य को पूरा करने

की प्रेरणा होनी चाहिए, वह है विश्व के सभी क्लस्टरों में विकास के सघन कार्यक्रम स्थापित करना। इस दुर्जेय उद्देश्य का तात्पर्य उस पैमाने और दायरे पर गतिविधि की व्यापकता और सघनता से है जो कभी देखा ही नहीं गया। नौ वर्षीय योजना के दौरान इस लक्ष्य की दिशा में तेजी से प्रगति अवश्य ही हासिल की जानी चाहिए।

प्रारंभिक कदम के रूप में, हम चाहते हैं कि आप राष्ट्रीय आध्यात्मिक सभाओं और क्षेत्रीय बहाई परिषदों को यह निर्धारित करने में सहायता करें कि क्या उनके क्षेत्रों को क्लस्टरों में विभाजित करने की उनकी रूपरेखा को किसी प्रकार के समायोजन से लाभ मिलेगा। जैसा कि आप जानते हैं, क्लस्टर एक ऐसे क्षेत्र को परिभाषित करता है जहां योजना की गतिविधियों को एक प्रबंधनीय और सततता बनाए रखने वाले तरीके से प्रोत्साहित किया जा सकता है। पिछले इक्कीस वर्षों में, क्लस्टर के आकार के बारे में बहुत कुछ सीखा गया है जो विभिन्न संदर्भों में और विश्व के विभिन्न हिस्सों में "प्रबंधनीय" है; कुछ देशों में, विकास के प्रभावों के कारण, बदलावों पर विचार प्रारम्भ किया जाने लगा है। अनेक मामलों में यह पुनर्मूल्यांकन किसी परिवर्तन की ओर नहीं ले जाएगा, लेकिन कुछ में इसका परिणाम क्लस्टर को विभाजित करेगा या आकार में कम करेगा, और कभी-कभी क्लस्टर बड़ा भी हो सकता है। प्राकृतिक भूभाग के कारण छिटपुट आबादी वाले क्षेत्रों को क्लस्टरों में विभाजित करने की योजना से बाहर रखा जा सकता है। निःसंदेह, कोई भी अनुयायी जो ऐसी जगहों पर निवास करते हों, कार्य रूपरेखा के जितने संभव हों, उतने तत्वों को अपनाएँगे, जो उनकी परिस्थितियों पर लागू होते हैं।

विकास की निरंतरता के साथ क्लस्टरों का अभिगमन समुदाय के प्रसार और सुगठन के लिए बुनियादी प्रारूप बना रहेगा। विकास पथ की जिन विशेषताओं का, विशेष रूप से पहले, दूसरे और तीसरे मील के पत्थर जो प्रगतिपथ को चिन्हित करते हैं, में अनुसरण किया जाना चाहिए, जो हमारे पिछले संदेशों से और अपने स्वयं के अनुभव से मित्रों को पहले से ही अच्छी तरह से ज्ञात हैं। और हमें यह नहीं लगता कि हमने पहले जो कहा है, उसे दोहराने की जरूरत है। एक वर्षीय योजना के अंत तक हम अनुमान लगाते हैं कि 6,000 से अधिक क्लस्टरों में विकास के कार्यक्रम चल रहे होंगे, इनमें से 5,000 के करीब में दूसरा मील का पत्थर पार हो चुका होगा, और इनमें से 1,300 में अनुयायी और आगे बढ़ चुके होंगे। ये आंकड़े आने वाले नौ वर्षों में बड़े पैमाने पर ऊपर बढ़े। एक बार जब प्रत्येक देश में क्लस्टरों को विभाजित करने की व्यवस्था योजना में समायोजन तय हो जाये, हम आग्रह करते हैं कि आप राष्ट्रीय सभाओं और क्षेत्रीय परिषदों के साथ मिलकर उन क्लस्टरों की संख्या का पूर्वानुमान लगाने का कार्य करें, जहां इस योजना के दौरान पहले, दूसरे और तीसरे मील के पत्थर के पार प्रगति की जा सकती है। यह ध्यान में रखा जाना चाहिए कि ये मात्र सुसूचित जानकारी पर आधारित अनुमान हैं: इन्हें बाद में आवश्यकतानुसार परिष्कृत किया जा सकता है और इन पर बहुत समय देने एवं परिश्रम करने की आवश्यकता नहीं है। इसलिए, हम अनुरोध करते हैं कि इन आकलनों के परिणाम बहाई विश्व केंद्र को नवरोज तक भेज दिय जाएं। रिजवान में, हम, नौ वर्षीय योजना के लिए बहाई विश्व की कुल सामूहिक आकांक्षाओं को प्रस्तुत करने में सक्षम होंगे।

हम जानते हैं कि कुछ ऐसे क्षेत्र और देश हैं जहां प्रभुधर्म विकास के प्रारम्भिक बिंदु पर ही रह गए हैं, और यह सुनिश्चित करने की अत्यधिक आवश्यकता है कि बहाई विश्व ने विकास प्रक्रिया को तीव्र करने के बारे में जो सीखा है, वह इन स्थानों को भी लाभान्वित करे। एक महत्वपूर्ण सीख जो स्पष्ट हो गई है, एक क्लस्टर, जहां तीसरे मील के पत्थर को पार किया जा चुका है अत्यधिक महत्व रखता है। एक बार एक ऐसे क्लस्टर में मित्रों ने ऐसी प्रगति के लिए आवश्यक क्षमतायेँ विकसित कर ली है, और अंतर्दृष्टियों को प्रसारित करने और समुदाय-निर्माण प्रयासों के अनुभव साझा करने के

साधन मौजूद हैं, तो आसपास के क्लस्टरों में प्रसार और सुगठन के कार्य में तेजी से गति प्राप्त करना संभव हो जाता है। इसे ध्यान में रखते हुए, यह आवश्यक है कि नौ वर्षीय योजना के दौरान विकास की यह प्रक्रिया प्रत्येक देश और प्रत्येक क्षेत्र के कम से कम एक क्लस्टर में तीव्रता के इस स्तर तक पहुंच जाए। यह योजना के मुख्य उद्देश्यों में से एक है और इसके लिए कई समर्पित आत्माओं के एकजुट प्रयास की आवश्यकता होगी। इसे प्राप्त करने के लिए कई रणनीतियों को लागू करने के लिए अंतर्राष्ट्रीय शिक्षण केंद्र आपके साथ काम करने के लिए तैयार है। इनमें से सबसे महत्वपूर्ण अंतर्राष्ट्रीय और होमफ्रंट पायनियरों की टीमों की तैनाती होगी जो कार्य करने की रूपरेखा से परिचित हैं और अनेक वर्षों तक प्रभुधर्म की सेवा के लिए सार्थक मात्रा में समय और ऊर्जा समर्पित करने के लिए तैयार हैं। आपको राष्ट्रीय आध्यात्मिक सभाओं और क्षेत्रीय बहाई परिषदों पर उन अनुयायियों को तत्काल प्रोत्साहित करने के लिए आवश्यक प्रभाव डालना है जो अतीत की अनेक नायक आत्माओं के नक्शेकदम पर चलकर प्रभुधर्म के प्रकाश को हर भूभाग में चमकना सुनिश्चित करने के लिए उठ खड़े हो सकते हैं। सहायता की आवश्यकता वाले स्थानों की ओर पायनियरों का प्रवाह उत्पन्न करने और अन्य माध्यमों से सहायता प्रदान करने के लिए हम विशेष रूप से उन देशों, क्षेत्रों और क्लस्टरों, जहां सामर्थ्य और अनुभव एकत्र हो चुके हैं, की ओर देखते हैं। समर्थन का यह प्रवाह एक और तरीका है जिसमें प्रगति के लिए आवश्यक सहयोग और पारस्परिक सहायता की भावना, व्यवस्थित कार्रवाई में स्वयं को प्रकट करती है।

योजनाओं की पिछली श्रृंखलाओं-विशेषकर पिछली पाँचवर्षीय योजना-की उपलब्धियां शिक्षण कार्य में जबरदस्त प्रगति के बगैर प्राप्त नहीं हो सकती थीं। इस कार्य का एक महत्वपूर्ण आयाम आध्यात्मिक विषयों पर वार्तालाप में सम्मिलित होने की क्षमता है, वह क्षमता जिसे 2015 के आपके सम्मेलन में हमारे संदेश में संबोधित किया गया था, जहां हमने बताया था कि इसे संस्थान के पाठ्यक्रमों में सहभागिता के माध्यम से और व्यावहारिक अनुभव प्राप्त करके कैसे विकसित किया जाता है। यह स्पष्ट है कि जमीनी स्तर पर सामने आने वाली गतिविधि का पैटर्न अनेक प्रकार की परिस्थितियों के द्वार खोलता है जिसमें ग्रहणशील आत्माएं - कभी-कभी पूरे परिवार या सहकर्मी समूह - सार्थक वार्तालाप में भाग ले सकते हैं जो प्रभुधर्म के उद्देश्य और बहाउल्लाह में रुचि जगाते हैं। समय के साथ, ऐसी कई आत्माएं बहाई समुदाय के साथ अपने आपको जोड़कर देखने लगती हैं, खासकर जब वे सेवा के माध्यम से सामुदायिक जीवन में भाग लेने का विश्वास हासिल करती हैं। बेशक, समुदाय किसी व्यक्ति द्वारा बड़े या छोटे किसी भी स्तर पर संबद्धता बनाए रखने का स्वागत करता है। फिर भी बहाउल्लाह को ईश्वर के प्रकटरूप में पहचानना और उन विशेषाधिकारों और जिम्मेदारियों को स्वीकार करना जो बहाई समुदाय में सदस्यता के साथ विशिष्ट रूप से जुड़े हुए हैं, एक व्यक्ति के आध्यात्मिक विकास में एक विलक्षण क्षण है, जो बहाई गतिविधियों में नियमित भागीदारी, अथवा बहाई सिद्धांतों के समर्थन में आवाज उठाने से बिलकुल भिन्न है। अनुभव ने दर्शाया है कि समुदाय-निर्माण के प्रयासों द्वारा क्षेत्र में बनाया गया वातावरण किसी को भी यह कदम सहजता से उठाने में सक्षम बनाता है। जहां कहीं भी ये प्रयास चल रहे हैं, मित्रों के लिए यह ध्यान रखना महत्वपूर्ण है कि प्रभुधर्म के द्वार खुले हैं और दहलीज पर खड़े लोगों को प्रोत्साहन देना है। और उन क्षेत्रों में जहां इस तरह के प्रयास कुछ समय से भली भांति रूप से स्थापित हो गए हैं, कई अनुयायी यह अनुभव कर रहे हैं कि गतिविधि का एक जीवंत, विस्तारित होता पैटर्न स्वाभाविक रूप से परिवारों, मित्रों के समूहों और यहां तक कि परिवारों के समूहों को प्रभुधर्म में प्रवेश करने के लिए तैयार कर सकता है। उन अवसरों में जहां सामूहिक पहचान की भावना साझा करने वालों के बीच समुदाय में शामिल होने की संभावना पर खुले तौर पर और समावेश करते हुए चर्चा की जा सकती है, आत्माएं इस कदम को एक साथ उठाने के लिए अधिक सहजता से उत्साहित महसूस कर सकती हैं। बहाई संस्थाओं, विशेष रूप से स्थानीय आध्यात्मिक सभाओं को ऐसी मनःस्थिति अपनानी चाहिए जो इस तरह के विकास की अनुमति दे, और यह सुनिश्चित करे कि किसी भी प्रकार की बाधा दूर हो।

हम आपसे और आपके सहायकों से, अनुयायियों, वे जहां कहीं भी रहते हैं, की मदद करने के लिए कहते हैं, समय-समय पर अपने परिवेश में प्रभुधर्म का शिक्षण करने के प्रभावी तरीकों की समीक्षा करें, और अपने हृदयों में शिक्षण के लिए जुनून पैदा करें जो दिव्य साम्राज्य की संपुष्टि को आकर्षित करेगा। जिन आत्माओं को प्रभुधर्म का आशीर्वाद दिया गया है, वे इस उपहार को स्वाभाविक रूप से रिश्तेदारों, मित्रों, सहपाठियों, सहकर्मियों और जिनसे वे अभी तक मिले भी नहीं, उनके साथ वार्तालाप के माध्यम से, हर जगह और हर पल सुनने वाले कान की तलाश करते हुए, साझा करने की स्वाभाविक इच्छा रखते हैं। अलग-अलग परिवेश और परिस्थितियां खुद को अलग-अलग तरीकों के लिए उपलब्ध कराती हैं, और दोस्तों को यह सीखने की एक सतत प्रक्रिया में व्यस्त रहना चाहिए कि वे जहां हैं उस स्थान पर सबसे प्रभावी क्या है।

सबसे उन्नत क्लस्टरों से सीखना

छह साल पहले हमने आपके लिए एक क्लस्टर की विशेषताओं का वर्णन किया था जहां मित्रों ने विकास की निरंतरता के साथ तीसरा मील का पत्थर पार कर लिया है। यहाँ तक पहुंचने का अर्थ है विशिष्ट पड़ोस या गांवों में होने वाली सघन गतिविधि, साथ ही क्लस्टर में रहने वाले अधिकांश अनुयायियों द्वारा किए जा रहे ठोस प्रयास - दूसरे शब्दों में, समुदाय निर्माण के काम में सार्वभौमिक सहभागिता की बढ़ती भावना। व्यवहार में, इसका अर्थ है बड़ी संख्या में बहाइयों को लामबंद करना जो रचनात्मक और बुद्धिमत्ता से योजना के कार्य की रूपरेखा को अपनी परिस्थितियों की वास्तविकता पर लागू कर रहे हैं, चाहे वे जिस भी क्लस्टर में रहते हैं। यह मांग करता है कि परिवार और व्यक्तिगत अनुयायी एक साथ काम करें और खुद को एक विस्तारित नाभिक से संबंधित देखने के लिए एक सचेत निर्णय लें। मित्रों के ऐसे समूह गतिविधियों में भागीदारी के दायरे को स्वयं से संबन्धित नेटवर्क - नेटवर्क जो कार्य या अध्ययन स्थल, स्थानीय स्कूल, या किसी अन्य प्रकार के सामुदायिक केंद्र के माध्यम से बनाए जाते हैं - को सम्मिलित कर विस्तारित करते हैं, और जो उनके साथ सेवा करने के लिए उठ खड़े होते हैं, उनके साथ-साथ चलते हैं। इन प्रयासों में जबरदस्त खासियत है। यहां तक कि जब एक क्लस्टर में सघन गतिविधि के कई फलते-फूलते केंद्र होते हैं, तब भी क्लस्टर के बाकी भागों में किए जा रहे प्रयास सभी चल रही गतिविधियों के एक बड़े अनुपात का प्रतिनिधित्व कर सकते हैं। हम इस संबंध में, कुछ क्लस्टरों में प्रभुधर्म के प्रति ग्रहणशीलता दर्शाती एक विशिष्ट आबादी, लेकिन वह पूरे क्लस्टर में फैली हुई है, तक क्रमबद्ध रूप से पहुंचने के लिए उठाए जा रहे कदमों को भी स्वीकार करते हैं। इसे समुदाय-निर्माण कार्य के एक विशेष स्वरूप में देखा जा सकता है, और एक जो महान संभावना दर्शाती है। जैसे-जैसे योजना के कार्य में इसके सभी रूपों में सहभागिता बढ़ती है, मित्रों के लिए एक-दूसरे के अनुभव से सीखने और एक-दूसरे के भीतर शिक्षण का आनंद की ज्योति जगाने के कई अवसर सामने आते हैं।

बेशक, हाल के वर्षों में ग्रहणशील पड़ोस और गांवों में किए जा रहे कार्य विशेष ध्यान का केंद्र रहे हैं। जब ऐसे स्थानों के निवासी बड़ी संख्या में बहाई गतिविधियों में भाग लेना शुरू करते हैं, इसमें निहित जटिलता से निपटने के लिए समन्वय पर अधिक ध्यान देने की आवश्यकता होती है। सघन गतिविधि के प्रत्येक केंद्र के भीतर, परिवारों के समूहों के बीच सहयोगात्मक व्यवस्थाएँ उभरती हैं, जो आस-पास के कई घरों में इस तरह की गतिविधियों का दायरा बढ़ाने की दृष्टि से आपस में समुदाय-निर्माण गतिविधियों का आयोजन करते हैं; मित्रों का एक अनौपचारिक नेटवर्क चल रहे प्रयासों को प्रोत्साहन और समर्थन प्रदान करता है। ऐसे स्थानों में दैनिक जीवन का चरित्र एक ऐसी संस्कृति जिसमें उपासना और सेवा एक साथ कई लोगों को शामिल करने वाली इच्छित गतिविधियाँ होती हैं, के अनुकूल बन रहा है। उल्लासित

करती, भली भांति तैयार सामुदायिक सभाएँ - कुछ मामलों में शिविरों और त्योहारों तक - बढ़ती आवृत्ति के साथ होती हैं, और ऐसे अवसरों पर संगीत और गीत प्रमुखता से प्रस्तुत होते हैं। वास्तव में, कलाएं शुरू से ही एक समुदाय के विकास का एक अभिन्न अंग हैं, ऐसी व्यवस्था में खुशी पैदा करने, एकता के बंधन को मजबूत करने, ज्ञान का प्रसार करने, समझ को सुगठित करने और यहां तक कि वृहद समाज के लोगों को प्रभुधर्म के सिद्धांतों से परिचित कराने के एक महत्वपूर्ण साधन के रूप में नजर आती हैं। और स्वाभाविक रूप से, बाह्यदर्शी होने की ओर मजबूती से ध्यान केन्द्रित रहता है: उन आत्माओं के साथ जो अभी तक प्रभुधर्म से अपरिचित हैं, क्रिया के एक फलते-फूलते पैटर्न के फलों को लगातार साझा करने के तरीके खोजने में ।

इस सब के बीच, हमने एक विशिष्ट, हर्षित करने वाली परिघटना देखी है, जिसकी प्रारंभिक झलक हमने आपके 2015 के सम्मेलन में अपने संदेश में एक नए सीमांत का प्रतिनिधित्व करने के रूप में वर्णित की है। यद्यपि सीखना कि बड़ी संख्या को कैसे अंगीकार करना है, यह तीसरा मील का पत्थर पार कर लेने वाले किसी भी क्लस्टर की विशेषता है, मित्रों का ध्यान अनिवार्य रूप से विस्तृत होना तब शुरू हो जाता है जब वे एक ऐसे बिंदु पर पहुंचते हैं जहां किसी विशेष क्षेत्र की जनसंख्या का एक महत्वपूर्ण हिस्सा समुदाय निर्माण गतिविधियों में भाग लेने लगता है। यह किसी क्लस्टर में केवल एक विशिष्ट आवासीय क्षेत्र के लिए, या ऐसे कई क्षेत्रों के लिए, या एक गांव के लिए सच हो सकता है; हो सकता है कि क्लस्टर के अन्य भाग अभी तक इस वास्तविकता तक न पहुंचे हों। लेकिन ऐसी जगहों पर जमीनी स्तर पर काम करने वाले मित्रों के मन में आस-पास रहने वाले सभी लोगों के विकास और खुशहाली के विचार बढ़ते रूप में अपना स्थान बनाते जाते हैं। बहाई संस्थाएं बच्चों और किशोरों की एक पूरी पीढ़ी की आध्यात्मिक शिक्षा के लिए अपनी जिम्मेदारी को अधिक गंभीरता से अनुभव करती हैं, जिनमें से अधिकांश या यहां तक कि सभी पहले से ही सामुदायिक गतिविधियों में लगे हुए हों। स्थानीय आध्यात्मिक सभाएं शासकीय अधिकारियों और स्थानीय नेताओं के साथ अपने संबंधों को मजबूत करती हैं, यहां तक कि औपचारिक रूप से मिलकर कार्य करना भी प्रारम्भ करती हैं, और किशोरों, युवाओं, महिलाओं, परिवारों, या अन्य लोगों के समूहों से उत्पन्न होने वाली सामाजिक क्रिया की बढ़ती पहल पर ध्यान दिया जाता है, जो अपने आसपास की आवश्यकताओं का प्रत्युत्तर दे रहे हैं। गतिविधि के व्यापक स्तर और विविधता को देखते हुए सहायक मण्डल सदस्यों को एक गांव या पड़ोस की सेवा के लिए कई सहायक नियुक्त करने की आवश्यकता होती है; प्रत्येक सहायक एक या अधिक कार्य प्रणालियों को अपना सकता है, आवश्यकतानुसार परामर्श और सहायता प्रदान कर सकता है, और गतिमान प्रक्रियाओं को संवेग प्रदान कर सकता है।

उन जगहों पर जहां योजना की गतिविधियां व्यापकता के एक ऐसे अंश तक पहुंच गई हैं, निवासियों के पास अब अपने विकास का प्रवाह-पाठ तय करने की क्षमता में काफी वृद्धि हुई है, और वहां की संस्थाओं और एजेंसियों के पास अब उनकी जिम्मेदारियों का एक विस्तारित दृष्टिकोण है। बेशक, इन जिम्मेदारियों में अभी भी लगातार क्षमता निर्माण और पहल करने वालों की सहायता करने के लिए मजबूत प्रणाली होना शामिल है। लेकिन समुदाय की उन्नति, पहले की अपेक्षा कहीं ज्यादा, काफी हद तक स्थानीय संस्थाओं और एजेंसियों की वातावरण में कार्यरत सामाजिक ताकतों के प्रति जागरूकता और समुदाय के अनेक प्रयासों की अखंडता को बनाए रखने के लिए काम करने पर निर्भर करती है। इस बीच, आसपास के समाज के साथ बहाई समुदाय के संबंधों में गहरा बदलाव आता है। प्रशासन की औपचारिक संरचनाओं और सहयोग की अनौपचारिक व्यवस्थाओं से नजर आता बहाई समुदाय समाज में अपनी तरह का एक अत्यधिक दृश्यमान नायक बन गया है, जो महत्वपूर्ण जिम्मेदारियों को निभाने के लिए तैयार है और आध्यात्मिक तथा भौतिक प्रगति के बारे में सीखने की एक व्यापक, सामूहिक प्रक्रिया को तेज करता है। साथ ही, जैसे जैसे बाह्य समाज बहाई

समुदाय के जीवन के कई पहलुओं को गले लगाता है और इसकी एक करने वाली भावना को आत्मसात करता है, इस प्रकार उत्पन्न गतिजता विभिन्न समूहों को बहाउल्लाह की मानवता की एकता की दृष्टि से प्रेरित एक संयुक्त आंदोलन में एक साथ लाती है। अब तक, ऐसे स्थानों की संख्या जहाँ सामुदायिक जीवन के बहाई पैटर्न ने ऐसी व्यापकता प्राप्त की है, कम ही है, परंतु यह बढ़ रही है। यहाँ समाज-निर्माण शक्ति का प्रदर्शन देखा गया है, जो पहले नहीं देखा गया।

स्वाभाविक रूप से, इस पैमाने पर बहाई गतिविधियों की व्यापकता की संभावना हर जगह नहीं है। क्लस्टर में या क्लस्टर के कुछ हिस्सों में स्थितियों से उत्पन्न और लोगों की विशिष्टताओं से जनित - अर्थात परिस्थितियों की वास्तविकता से जो अंतर होता है, उसकी समझ आवश्यक है। तदनुसार, प्रभुधर्म की समाज-निर्माण शक्ति की अभिव्यक्ति, अलग-अलग प्रतिवेशों में अलग-अलग होगी। लेकिन इस बात को ध्यान दिये बगैर कि बहाई समुदाय का जीवन उन लोगों को किस हद तक गले लगाता है जो एक क्षेत्र विशेष में रहते हैं- एक क्लस्टर में विकास के कार्यक्रम की सघनता चाहे जैसी हो, पड़ोस या गांव में गतिविधि के स्तर चाहे जैसे हों- जमीनी स्तर पर सेवा करने वाले मित्रों की चुनौतियाँ हर जगह एक ही सी होती हैं। उन्हें अपनी स्वयं की वास्तविकता को पढ़ने और पूछने में सक्षम होना चाहिए: आने वाले चक्र या चक्रों की श्रृंखला में आगे बढ़ने के लिए संभावनाओं और आवश्यकताओं के प्रकाश में उपयुक्त उद्देश्य क्या होंगे? आप और आपके सहायक इस प्रश्न को प्रस्तुत करने और यह सुनिश्चित करने के लिए आदर्श स्थिति में हैं कि उपयुक्त रणनीतियों की पहचान की जाये। एक ही जैसे क्लस्टरों के मित्रों के अनुभवों से बहुत कुछ सीखा जा सकता है, एक समुदाय जो उसी रास्ते पर एक कदम आगे है, अगले लक्ष्य के लिए प्रयास करने के बारे में मूल्यवान अंतर्दृष्टि प्रदान कर सकता है। जब मित्र विचार करते हैं कि उनके सामने क्या है, वे आसानी से देखेंगे कि प्रत्येक समुदाय के समक्ष पाने के लिए एक लक्ष्य है और प्रत्येक लक्ष्य तक पहुँचने का एक मार्ग भी है। इस मार्ग पर आगे बढ़ते हुए, क्या हम स्वयं बहाउल्लाह को नहीं देख पा रहे, जिनके एक हाथ में मानवता के मामलों की बागडोर हैं, दूसरा हाथ सभी को जल्दी, जल्दी करने के लिए इशारा कर रहा है?

सामाजिक रूपान्तरण में योगदान

बहाउल्लाह का प्रकटीकरण मानवता के आंतरिक जीवन और सामाजिक वातावरण दोनों के रूपांतरण से संबंधित है। शोगी एफेंदी की ओर से लिखा गया एक पत्र वर्णन करता है कि कैसे सामाजिक वातावरण "परिवेश" प्रदान करता है जिसमें आत्माएं "आध्यात्मिक रूप से विकसित" हो सकती हैं और प्रकटीकरण के प्रकाश से प्रदीप्त हो "ईश्वर के प्रकाश को पूर्ण प्रतिबिंबित" कर सकती हैं"। एक स्पष्ट संकेत कि प्रभुधर्म की समाज-निर्माण शक्ति एक क्लस्टर में निर्मुक्त हो रही है, यह है कि इसके निवासियों के बढ़ते समूह द्वारा, प्रभुधर्म की शिक्षाओं से प्रेरित होकर, वे जिस वृहत समुदाय से संबंध रखते हैं, उसके आध्यात्मिक चरित्र और सामाजिक स्थितियों को बेहतर बनाने में मदद करने के प्रयास किए जा रहे हैं। बहाइयों द्वारा दिया गया योगदान सेवा के लिए क्षमता निर्माण पर ध्यान केंद्रित करने के कारण विशिष्ट है; यह एक ऐसी विधा है जो किसी जनसमुदाय के अपने विकास के नायक बनने की क्षमता में विश्वास पर आधारित है।

जैसे-जैसे समूह में समुदाय-निर्माण कार्य की तीव्रता बढ़ती है, वहां के मित्र अनिवार्य रूप से सामाजिक, आर्थिक, या सांस्कृतिक बाधाओं के प्रति अधिक जागरूक हो जाते हैं जो लोगों की आध्यात्मिक और भौतिक प्रगति में बाधक हैं। बच्चों और किशोरों की शिक्षा में समर्थन की कमी; पारंपरिक रीति-रिवाजों के परिणामस्वरूप कम उम्र में शादी करने का लड़कियों पर दबाव, परिवारों को उपचार संबंधी अपरिचित प्रणालियों को समझने में सहायता की आवश्यकता होना;

एक गाँव का किसी बुनियादी जरूरत के अभाव में संघर्ष करना, या विभिन्न समूहों के बीच शत्रुता की विरासत से दीर्घकालिक पूर्वाग्रह का उत्पन्न होना, जब बहाई समुदाय के प्रसार और सुगठन के प्रयास उसे इन स्थितियों और कई अन्य स्थितियों के संपर्क में लाते हैं तो परिस्थितियों के अनुरूप वह ऐसी वास्तविकताओं का प्रत्युत्तर देने की ओर बढ़ता है। ऐसी स्थितियों पर चिंतन करने से यह स्पष्ट हो जाता है कि, क्लस्टरों के भीतर, प्रसार और सुगठन, सामाजिक क्रिया, और प्रचलित संवादों में योगदान समाज के जमीनी स्तर पर किए गए एकल, एकीकृत, बाहयमुखी प्रयास के आयाम हैं। इन सभी प्रयासों को कार्य की समान रूपरेखा के अनुसार आगे बढ़ाया जाता है, और यह सबसे ऊपर गतिविधि के समग्र पैटर्न में सुसंगतता लाता है।

किसी क्लस्टर में जमीनी स्तर पर सामाजिक क्रिया के प्रारंभिक स्पंदन तब दिखाई देने लगते हैं जब मानव संसाधनों की उपलब्धता बढ़ती है और कई तरह के कार्यों की एक विस्तृत श्रृंखला के लिए क्षमता विकसित होती है। गाँव उल्लेखनीय रूप से उर्वर भूमि सिद्ध हुए हैं जहाँ सामाजिक क्रियाओं की पहल हुई है और वे बनाए रखे गए हैं, लेकिन शहरी परिवेश में भी, वहाँ रहने वाले मित्र सामाजिक वातावरण के अनुकूल गतिविधियों और परियोजनाओं को अंजाम देने में सफल हुए हैं, कभी स्थानीय स्कूलों, नागरिक समाज की एजेंसियों, या यहां तक कि सरकारी निकायों के साथ काम करके भी। पर्यावरण, कृषि, स्वास्थ्य, कला और विशेष रूप से शिक्षा सहित कई महत्वपूर्ण क्षेत्रों में सामाजिक क्रियायेँ की जा रही हैं। नौ वर्षीय योजना के दौरान, और विशेष रूप से विशिष्ट संस्थान पाठ्यक्रमों जिनसे इस क्षेत्र में अधिक गतिविधि को बढ़ावा मिलता है, के अध्ययन से हम जनसमुदाय के सामाजिक और आर्थिक विकास को बढ़ावा देने के लिए औपचारिक और अनौपचारिक प्रयासों के प्रसार को देखने की आशा करते हैं। इनमें से कुछ समुदाय-आधारित पहलों को अपने काम को बनाए रखने के लिए साधारण प्रशासनिक ढांचे की आवश्यकता होगी। जहाँ परिस्थितियाँ अनुकूल हों, स्थानीय आध्यात्मिक सभाओं को यह सीखने के लिए प्रोत्साहित करने की आवश्यकता होगी कि नई, शुरुआती पहलों को कैसे सर्वोत्तम प्रकार से विकसित किया जाए और संभावना दिखाने वाले प्रयासों को कैसे बढ़ावा दिया जाए। कुछ मामलों में, प्रयास के एक विशेष क्षेत्र से जुड़ी आवश्यकताओं के लिए बहाई-प्रेरित संगठन की स्थापना की आवश्यकता होगी, और हम आने वाली योजना के दौरान ऐसे और अधिक संगठनों के प्रकट होने की आशा करते हैं। अपने भाग के लिए, राष्ट्रीय आध्यात्मिक सभाओं को ऐसे तरीके खोजने होंगे जिससे वे अपने समुदायों के जमीनी स्तर पर सीखी जा रही बातों के बारे में भली भांति अवगत रह सकें और प्राप्त किए जा रहे अनुभव का विश्लेषण कर सकें; यह कुछ स्थानों पर सामाजिक कार्यों लिए समर्पित एक संस्थागत व्यवस्था के निर्माण की मांग करेगा। बहाई विश्व में हमें यह देखकर प्रसन्नता हो रही है कि बहाई अंतर्राष्ट्रीय विकास संगठन के प्रोत्साहन और समर्थन के माध्यम से प्रयास के इस क्षेत्र में कितना संवेग पहले ही उत्पन्न किया जा चुका है।

सामाजिक क्रिया में संलग्न होने की क्षमता के साथ निकटता से जुड़ी हुई है, समाज के संवादों में योगदान करने की क्षमता। मूलतः साधारण रूप से यह लोगों के जीवन को प्रभावित करने वाले विषय के संबंध में वार्तालाप में भाग लेने और बहाई सिद्धांतों और बहाई अनुभव पर आधारित एक दृष्टिकोण प्रस्तुत करने की क्षमता है। इस तरह से देखा जाए तो यह एक ऐसा कौशल है जिसका अभ्यास कई बहाइयों को लगभग प्रतिदिन करने का अवसर मिलता है, उदाहरण के लिए अपने अध्ययन या व्यवसाय में, और जिसे संस्थान के पाठ्यक्रमों में शामिल हो कर विकसित किया जाता है; अपनी अधिक औपचारिक अभिव्यक्ति में, यह बहाई अंतर्राष्ट्रीय समुदाय और वाह्य मामलों के राष्ट्रीय कार्यालयों के कार्य क्षेत्र के केंद्र में है। तथापि, जमीनी स्तर पर प्रभुधर्म की समाज-निर्माण शक्ति की निर्मुक्ति के संबंध में, यह एक ऐसी क्षमता है जो अधिक मांग में तब आती है जब प्रसार और सुगठन के काम के माध्यम से जनसमुदाय के साथ बने घनिष्ठ संबंध क्षेत्र में

व्याप्त सामाजिक समस्याओं तथा उसे दूर करने की लोगों की आकांक्षाओं के प्रति अधिक सजग होते हैं। जैसे-जैसे समुदाय-निर्माण गतिविधियों में भाग लेने वालों की संख्या बढ़ती जाती है, वैसे-वैसे बहाई समुदाय को एक एकीकृत निकाय के रूप में सामाजिक प्रगति में आने वाली बाधाओं और उन लोगों के मन-मस्तिष्क पर बोझ डालने वाले मुद्दों पर अपने विचारित दृष्टिकोण देने की आवश्यकता भी बढ़ती है जिनके साथ वह अंतर्क्रिया करता है। स्थानीय आध्यात्मिक सभाओं के लिए इसका विशेष महत्व है। उन जगहों पर जहां योजना की गतिविधियों ने व्यापकता का एक अंश प्राप्त कर लिया है, स्थानीय सभा नैतिक अंतर्दृष्टि के स्रोत के रूप में अधिक विस्तारित रूप से देखी जाने लगती है। समय के साथ, सामाजिक संवादों में योगदान करने के प्रयास अधिक व्यवस्थित हो जाते हैं, और बहाई अपने आसपास के लोगों को संवाद में रचनात्मक रूप से शामिल होने और आम सहमति प्राप्त करने में मदद करने में निपुण हो जाते हैं। समुदाय के नेताओं और शासकीय अधिकारियों के साथ प्रभुधर्म के दृष्टिकोण को साझा करने के मौकों की तलाश की जाती है, और ऐसे मंच उत्पन्न किए जाते हैं जिसमें विभिन्न समूहों और हितों के प्रतिनिधियों को परामर्श के माध्यम से एक समान दृष्टिकोण तक पहुंचने में सहायता की जा सकती है। हम उन कदमों से प्रसन्न हैं जो यह जानने के लिए पहले ही उठाए जा चुके हैं कि कैसे बहाउल्लाह के प्रकटीकरण और बहाई समुदायों के अनुभव से प्राप्त अंतर्दृष्टि को स्थानीय स्तर पर मुख्य सामाजिक मुद्दों पर लागू किया जा सकता है; निश्चित ही नौ वर्षीय योजना के दौरान इस संबंध में और भी बहुत कुछ सीखना है।

हम इस बात पर जोर देना चाहते हैं कि ऐतिहासिक रूप से और अभी भी, सामाजिक क्रिया और समाज में प्रचलित संवादों में भाग लेने के प्रयास न केवल विकास के संदर्भ में उभरे हैं, बल्कि व्यक्तिगत बहाइयों को उपलब्ध तरीकों द्वारा समाज की प्रगति में योगदान करने के लिए किए जा रहे प्रयासों के परिणामस्वरूप भी सामने आए हैं। विश्व की बेहतरी के लिए काम करने हेतु बहाउल्लाह के आह्वान के व्यक्तिगत प्रत्युत्तर के रूप में, अनुयायियों ने कुछ व्यवसायों को चुना है और समान विचारधारा वाले समूहों और संगठनों की गतिविधियों का समर्थन करने के अवसरों की तलाश की है। विभिन्न प्रकार के सामाजिक मुद्दों का जवाब देने के लिए बड़ी और छोटी दोनों प्रकार की परियोजनाएं शुरू की गई हैं। कई अलग-अलग उद्देश्यों के लिए काम करने हेतु व्यक्तियों के समूहों द्वारा कई बहाई-प्रेरित संगठनों की स्थापना की गई है, और एक विशेष संवाद पर ध्यान देने के लिए विशेषज्ञ संस्थागत व्यवस्थाओं की बुनियाद रखी गई है। ये सभी प्रयास, चाहे वे किसी भी पैमाने पर किए गए हों, विश्व भर में बहाई समुदाय के जमीनी स्तर पर होने वाली गतिविधियों का मार्गदर्शन करने वाले सिद्धांतों और अंतर्दृष्टि को आकर्षित करने में सक्षम होने से लाभान्वित हुए हैं, और उन्हें स्थानीय और राष्ट्रीय आध्यात्मिक सभाओं की बुद्धिमत्तापूर्ण सलाहों से भी लाभ हुआ है। एक उलझन और पीड़ा से भरी दुनिया समस्याओं के प्रत्युत्तर में आशीर्वादित सौंदर्य के समर्पित अनुयायियों द्वारा प्रभुधर्म की इन विविध, सामंजस्यपूर्ण अभिव्यक्तियों को देखकर हम आनंदित होते हैं।

शैक्षिक उद्यम और प्रशिक्षण संस्थान

आध्यात्मिक और सामाजिक रूपांतरण की बहाई अवधारणा के लिए शिक्षा के महत्व को शायद ही कम करके आंका जा सकता है। बहाउल्लाह कहते हैं, "ईश्वर के नाम, शिक्षक, के प्रकाश के प्रकटीकरण पर विचार करो। देखो, इस प्रकार के प्रकटीकरण के प्रमाण समस्त वस्तुओं में कैसे प्रकट हैं, कैसे समस्त प्राणियों की भलाई इस पर निर्भर करती है।" समुदाय निर्माण के कार्य में शिक्षा का महत्व अचूक है, और सामाजिक क्रिया के क्षेत्र में शिक्षा का प्रावधान विश्व के अधिकांश हिस्सों में बहाइयों का महत्वपूर्ण योगदान है। शिक्षा प्रदान करने के लिए बहाई विश्व द्वारा बनाई गई संरचनाओं और एजेंसियों में सबसे प्रमुख, निश्चित रूप से, प्रशिक्षण संस्थान है। वास्तव में, विश्व भर में ऐसी दक्षता के साथ काम करने वाले राष्ट्रीय और क्षेत्रीय प्रशिक्षण संस्थानों का नेटवर्क वैश्विक योजनाओं की पिछली श्रृंखला के सबसे सर्वाधिक चयनिक

सुफलों में से एक है। संस्थान प्रक्रिया से व्यक्तियों की सतत बढ़ती संख्या को लाभान्वित कर समुदायों के भीतर सेवा के लिए क्षमता निर्माण वर्तमान श्रृंखला की योजनाओं की एक केंद्रीय विशेषता बनी रहेगी। पहले ही उभर चुकी समुदाय विकास की क्षमता, जिसका प्रतिनिधित्व सहशिक्षक, अनुप्रेरक, या बच्चों की कक्षा के शिक्षकों के रूप में सेवा दे रहे लाखों व्यक्ति करते हैं, ऐतिहासिक महत्व के संसाधन हैं।

जब हमने पहली बार प्रशिक्षण संस्थान की अवधारणा की प्रस्तुति की थी, तो यह प्रसार और सुगठन के कार्यों को करने के लिए मानव संसाधन जुटाने की आवश्यकता के संदर्भ में था। इस समय, जब योजनाओं की एक नई श्रृंखला अभी शुरू हुई है, हम आपको अधिक विस्तृत दृष्टिकोण अपनाने के लिए आमंत्रित करते हैं। संस्थान के पाठ्यक्रमों में सहभागिता वृहत समुदाय के जीवन में सदैव गहरे जुड़ाव के लिए ईश्वर के मित्रों को तैयार कर रही है; यह उन्हें ज्ञान, अंतर्दृष्टि और कौशल प्रदान कर रहा है जो उन्हें न केवल अपने समुदाय के विकास की प्रक्रिया में, बल्कि समाज की प्रगति में भी योगदान करने में सक्षम बनाता है। संक्षेप में, संस्थान प्रभुधर्म की समाज-निर्माण शक्ति को निर्मुक्त करने का एक शक्तिशाली साधन है। यद्यपि इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए पाठ्य सामग्री विकसित करने का कार्य एक दीर्घकालिक उपक्रम है, मौजूदा सामग्रियों का पहले ही लक्ष्य वृहद पहल के लिए क्षमता निर्माण करना है। इसके अतिरिक्त, वे पांच वर्ष की आयु से, ऊपर की ओर किशोरों की आयु तक और वयस्कता तक एक सहज सुसंगत शैक्षिक अनुभव प्रदान करते हैं, और वे जमीनी स्तर पर सामने आने वाली गतिविधियों के पैटर्न के प्रत्यक्ष समकक्ष कार्य करते हैं। इसके संबंध में, हमें यह देखकर प्रसन्नता हुई है कि दुनिया के विभिन्न हिस्सों में मित्र, विभिन्न सामाजिक और सांस्कृतिक संदर्भों में, सामुदायिक विकास के पहलुओं के संबंध में अंतर्दृष्टि उत्पन्न कर रहे हैं। यदि इन अंतर्दृष्टियों को, और जो अभी उभरनी हैं, बहाई समुदायों को अधिक विस्तृत रूप से लाभान्वित करना है, तो शैक्षिक सामग्री को तैयार करने और परिष्करण के लिए प्रणालियों को विस्तार देने की आवश्यकता होगी। इसे ध्यान में रखते हुए, हम जल्द ही उस तरीके को प्रस्तुत करेंगे जो आने वाले वर्षों में इस कार्य को मार्गदर्शित करेगा।

शैक्षिक प्रक्रिया के तीन चरणों में से प्रत्येक को उपलब्ध कराने के लिए संस्थानों की क्षमता बढ़ाने के संबंध में, हमें यह देखकर प्रसन्नता हो रही है कि इनकी उपलब्धता के लिए प्रणाली का विस्तार करने के अतिरिक्त, स्वयं शैक्षिक अनुभव की गुणवत्ता को बढ़ाने के लिए तेजी से ध्यान दिया जा रहा है। एक महत्वपूर्ण आवश्यकता है, संस्थान के काम में योगदान देने वाले सभी लोगों की शैक्षिक विषयवस्तु के उद्देश्य, इसकी संरचना, इसके शैक्षणिक सिद्धांत, इसकी कार्यप्रणाली, इसकी केंद्रीय अवधारणाएं, इसके अंतर्संबंधों के बारे में अपनी समझ को उत्तरोत्तर आगे बढ़ाने के लिए सक्षम करना। आपके 2015 के सम्मेलन में हमारे संदेश में वर्णित सहयोगी समूहों द्वारा इस संबंध में कई प्रशिक्षण संस्थान मंडलों की मदद की गई है। कुछ स्थानों पर, अलग-अलग दलों ने क्रमशः बच्चों की कक्षाओं, किशोर समूहों और अध्ययनवृत कक्षाओं पर ध्यान केंद्रित करना शुरू कर दिया है, उन कारकों की पहचान करना जो उनकी प्रभावशीलता में योगदान करते हैं और सेवा के प्रत्येक क्षेत्र में शामिल मित्रों की अपनी क्षमता और बढ़ाने में सहायता करने के तरीके ढूंढते हैं। किसी क्षेत्र के सहायक मण्डल सदस्य और उनके सहायक अधिकांशतः सबसे पहले यह देख पाते हैं कि जो सीखा जा रहा है वह आसपास के क्लस्टरों में और गहन गतिविधि के केंद्रों में अधिक से अधिक मित्रों तक पहुंचे। संस्थान की गतिविधियों को बढ़ावा देने में गहन अनुभव रखने वाले लोग संसाधनपूर्ण व्यक्ति के रूप में सेवा दे रहे हैं, और उन्होंने संस्थानों को विकास के प्राथमिक बिंदु से आगे विकास करने में मदद करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। फिर भी, सामान्य तौर पर यह सलाहकार ही हैं जो यह सुनिश्चित कर रहे हैं कि प्रत्येक संस्थान पड़ोसी देशों और क्षेत्रों में उनकी सहयोगी एजेंसियों द्वारा उत्पन्न की जा रही कई आवश्यक अंतर्दृष्टि से परिचित हों। सलाहकारों ने संस्थानों को अलग-अलग आकार के समूहों

में संगठित करने की व्यवस्था की है ताकि सबसे अनुभवी संस्थानों द्वारा सीखे जा रहे पाठों को औपचारिक सेमिनारों के माध्यम से अधिक वृहद रूप से साझा किया जा सके। इन सभी व्यवस्थाओं को अगली योजना के दौरान सुदृढ़ करने की आवश्यकता होगी। उन स्थानों पर जहां किशोर आध्यात्मिक सशक्तिकरण कार्यक्रम के बारे में सीख के प्रसार के लिए एक केंद्र संचालित हो रहा है, सीख केंद्र (लर्निंग साइट) और संबद्ध संस्थानों के बीच सहयोग पहले से ही बेहद फलदायी साबित हुआ है, इसमें और तीव्रता लानी चाहिए; एक एकीकृत लक्ष्य के लिए उनकी पहल और क्लस्टरों को आगे बढ़ते देखने की उनकी साझा इच्छा, सहयोग की भावना और पारस्परिक सहायता के फलने-फूलने के लिए आदर्श परिस्थितियों का निर्माण करती है। संस्थान प्रक्रिया की प्रभावशीलता में योगदान करने वाले कारकों के बारे में अब जो ज्ञान एकत्र हुआ है, वह विस्तृत है, और जो सीखा गया है उसे व्यवस्थित करने और इसे आपको उपलब्ध कराने के लिए हम अंतर्राष्ट्रीय शिक्षण केंद्र की ओर देखते हैं।

हमने ऊपर जो वर्णन किया है वह निरंतर परिष्करण की स्थिति में एक शैक्षिक प्रणाली है। अनेक व्यक्तियों को इसके और विकास के लिए अपना समर्थन देने की जरूरत है; संस्थान और सामान्य तौर पर बहाई संस्थाओं को पहले योजना बनाने और यह सुनिश्चित करने की आवश्यकता है कि ऐसे व्यक्ति जिन्होंने समुदाय के शैक्षिक प्रयासों में सहयोग करने की काफी क्षमता विकसित की है, वे अपनी सेवा को बनाए रखें और तब भी संस्थान के कार्यों में अर्थपूर्ण ढंग से संलग्न रहें जब उनके जीवन की परिस्थितियां बदल जाती हैं। संस्थान की प्रक्रिया की प्रभावशीलता की सराहना करते हुए, बहाउल्लाह का प्रत्येक अनुयायी-विशेषकर बहाई युवा किसी न किसी तरह से इसकी उन्नति में योगदान देने की इच्छा महसूस करेगा। संस्थान अच्छी तरह से जानते हैं कि युवाओं के पास मौजूद क्षमता को निर्मुक्त करना उनके लिए एक पवित्र कार्य है; अब हम चाहते हैं कि बहाई युवा संस्थान के भविष्य के विकास को उसी आलोक में देखें। संस्थान को उच्च स्तर के क्रियाकलाप में लाने के लिए नौ साल के समुदाय-व्यापी उद्यम के मोर्चे पर, हम युवाओं द्वारा मानक स्थापित करते व्यापक आंदोलन को देखने की आशा करते हैं। उन्हें अपने स्कूलों और विश्वविद्यालयों में, और कार्य, परिवार, या सामाजिक संपर्क के लिए समर्पित जगहों में - संस्थान के कार्यक्रमों से लाभ उठाने के लिए अधिक से अधिक आत्माओं को प्रोत्साहित करने के लिए हर अवसर का लाभ उठाना चाहिए। कुछ युवा शिक्षा के प्रावधान, विशेष रूप से अपने से कम उम्र वालों के लिए, सेवा की अवधि- संभवतः लगातार कुछ वर्षों तक सक्षम होंगे; अनेक लोगों के लिए, संस्थान की गतिविधियों में मदद उनकी अपनी शिक्षा एवं जीविकोपार्जन के दौरान उनके जीवन का एक सदैव विद्यमान आयाम होगा; लेकिन किसी के लिए भी यह एक आकांक्षित प्रतिबद्धता से कम कुछ नहीं होना चाहिए।

विश्व के अनेक भागों में, संस्थान प्रक्रिया में व्यक्तियों और परिवारों की भागीदारी का एक स्वाभाविक परिणाम शिक्षा के सभी रूपों के महत्व के बारे में एक बढ़ी हुई जागरूकता है। बच्चों की कक्षा के शिक्षकों के रूप में सेवा देने वाले मित्र अपने द्वारा पढ़ाए जाने वाले बच्चों के वृहद शैक्षिक विकास में गहरी रुचि लेते हैं, जबकि सह-शिक्षक और अनुप्रेरक के रूप में सेवा देने वाले मित्र स्वाभाविक रूप से इस बात से चिंतित होते हैं कि वयस्कता को पहुँचते अथवा प्रवेश करने वाले-लड़कियां और लड़के समान रूप से - अनेक प्रकार की शिक्षा, जो संस्थान द्वारा प्रदान किए जाने वाले पाठ्यक्रमों तक ही सीमित नहीं है, किस प्रकार प्राप्त कर सकते हैं और लाभ उठा सकते हैं। उदाहरण के लिए, वे युवाओं को अप्रेंटिसशिप या विश्वविद्यालय में अध्ययन करने के लिए प्रोत्साहित कर सकते हैं। हम इस बात से प्रभावित हुए हैं कि कैसे, कई समुदायों में, बड़ी संख्या में संस्थान की प्रक्रिया में संलग्नता ने जनसमुदाय के भीतर संस्कृति के इस पहलू को धीरे-धीरे नया स्वरूप दिया है। प्रभुधर्म की संस्थाओं को यह सुनिश्चित करने की जिम्मेदारी लेनी होगी कि जैसे-जैसे सजगता इस प्रकार बढ़ती है, परिणामस्वरूप युवा लोगों में जो महान आकांक्षाएं पैदा होती हैं - शिक्षा और प्रशिक्षण प्राप्त करने की आकांक्षाएं जो

उन्हें जीवन भर अपने समुदाय की अर्थपूर्ण सेवा करने देंगी-पूरी की जा सकती हैं। एक समुदाय का और अंततः, पीढ़ी दर पीढ़ी किसी राष्ट्र का दीर्घकालीन विकास काफी हद तक उन लोगों में निवेश करने के लिए किए गए प्रयास पर निर्भर करता है जो सामूहिक सामाजिक प्रगति की जिम्मेदारी लेंगे।

बहाई सिद्धांतों पर स्थापित किए गए एक समुदाय के लिए शिक्षा की केंद्रीयता का यह अन्वेषण एक और अवलोकन के बिना अधूरा रहेगा। शोगी एफेंदी ने "निरंतर उद्यम" के माध्यम से, "बहाउल्लाह के भव्य प्रकटीकरण के महत्व की अधिक पर्याप्त समझ" प्राप्त करने के लिए प्रयास करने के महत्व पर बहुत जोर दिया है। असीमित संख्या में आत्माओं को प्रकटीकरण के जीवनदायनी जल और ईश्वर के वचन के अक्षय अर्थ का क्रमबद्ध दर्शन कराने के उपकरण के रूप में प्रशिक्षण संस्थान का कोई सानी नहीं है। लेकिन प्रभुधर्म और उसकी शिक्षाओं के बारे में अपनी समझ बढ़ाने के मित्रों के प्रयास निश्चित रूप से संस्थान की प्रक्रिया में भागीदारी तक ही सीमित नहीं हैं। वास्तव में, किसी संस्थान की प्रभावशीलता का एक मजबूत संकेतक वह प्यास है जो उन लोगों के भीतर पैदा होती है जो बहाउल्लाह के प्रभुधर्म का अध्ययन व्यक्तिगत रूप से, तथा सामूहिक रूप से भी जारी रखने के लिए – यह चाहे संस्थानों द्वारा बनाए गए औपचारिक स्थानों में हो या अधिक अनौपचारिक वातावरण में, इसकी सामग्री के साथ जुड़ते हैं। प्रकटीकरण के अध्ययन से परे, मानव उद्यमों के अनगिनत क्षेत्रों के लिए शिक्षण के निहितार्थ बहुत महत्वपूर्ण हैं। इन्स्टीट्यूट फॉर स्टडीज़ इन ग्लोबल प्रोस्पेरिटी (ISGP) द्वारा आयोजित सेमिनारों में भागीदारी शिक्षा के एक रूप का उल्लेखनीय उदाहरण है जिसके माध्यम से युवा अनुयायी मानवता की प्रगति के लिए प्रासंगिक मुद्दों पर बहाई दृष्टिकोण से बेहतर परिचित हो रहे हैं। प्रकटीकरण के महासागर की विशालता को देखते हुए, यह स्पष्ट होगा कि इसकी गहराईयों की खोज सेवा के मार्ग पर चलने वाली प्रत्येक आत्मा का आजीवन कार्य है।

जैसे-जैसे विश्व के विभिन्न भागों में समाज की प्रगति के लिए प्रभुधर्म द्वारा किए जा रहे योगदान को अधिक से अधिक दृश्यता प्राप्त होती है, बहाई समुदाय को उन सिद्धांतों को समझने और मानवता द्वारा सामना किए जाने वाले मुद्दों पर उनकी उपयुक्तता प्रदर्शित करने के लिए अधिकाधिक आह्वान किया जाएगा। एक समुदाय का बौद्धिक जीवन जितना अधिक फलता-फूलता और पनपता है, इस आह्वान का उत्तर देने की उसकी क्षमता उतनी ही अधिक होती है। यह बहाउल्लाह के अनुयायियों पर निर्भर करेगा कि वे चिंतन-जगत तथा कर्म-जगत में मेल खाती आध्यात्मिक और भौतिक प्रगति के प्रति अपनी प्रतिबद्धता से बौद्धिक दृढ़ता और विचारों को स्पष्टता प्रदान करें।

सभी स्तरों पर प्रशासनिक क्षमता बढ़ाना

अस्सी वर्ष पूर्व, संरक्षक की ओर से लिखे गए एक पत्र में बहाई प्रशासन को "वह पहला आकार जो भविष्य में सामाजिक जीवन और सामुदायिक जीवन का नियम होगा" बताया गया था। आज, रचनात्मक युग की दूसरी शताब्दी के प्रारंभ में, बहाई प्रशासन का आकार काफी विकसित हो चुका है, और इसका निरंतर विकास प्रभुधर्म की समाज-निर्माण शक्ति को निर्मुक्त करने के लिए आवश्यक होगा।

जमीनी स्तर पर प्रभुधर्म का प्रशासन, निश्चित रूप से, स्थानीय आध्यात्मिक सभाओं के विकास के साथ अंतरंगता से जुड़ा हुआ है। शोगी एफेंदी ने न्याय के इन नवजात मंदिरों का वर्णन "बहाई समाज के प्रमुख स्नायुओं के साथ-साथ इसके प्रशासनिक ढांचे की अंतिम नींव" के रूप में किया है, और वह उनकी रचना के महत्व पर बहुत जोर देते हैं। 1995 में, हमने उस प्रथा को फिर से स्थापित करने का आह्वान किया जिसमें सभी स्थानीय सभाओं को, नवगठित होने वाली

सभाएं भी, वर्ष के किसी अन्य समय के स्थान पर रिजवान के पहले दिन चुना जाना था। यह बदलाव इस तथ्य से संबंधित था कि, जहाँ एक स्थान से बाहर के अनुयायी चुनावी प्रक्रिया में सहायता कर सकते हैं, किसी भी सभा को चुनने और उसके संचालन को बनाए रखने की प्राथमिक जिम्मेदारी उस जगह के बहाइयों की होती है; प्रशासनिक गतिविधि करने के लिए बहुत कुछ उनकी तत्परता पर निर्भर करता है। हाल के वर्षों में यह देखा गया है कि जब शिक्षाओं पर आधारित गतिविधि का एक पैटर्न वहां रहने वाले व्यक्तियों और परिवारों के बीच स्थापित हो जाता है तो किस प्रकार बहाई पहचान की भावना एक स्थान में धीरे-धीरे शक्ति प्राप्त कर सकती है। इस प्रकार, जब तक स्थानीय सभा का गठन संभव हो पाता है, तब तक समुदाय-निर्माण के प्रयासों के संबंध में एक समुदाय बहुधा एक निश्चित स्तर की क्षमता प्राप्त कर चुका होता है। जैसे-जैसे यह बिंदु निकट आता है - और इसमें अनावश्यक रूप से देरी नहीं की जानी चाहिए - बहाई प्रशासन से जुड़े सामुदायिक जीवन के औपचारिक पहलुओं की सराहना का भाव उत्पन्न करने के प्रयास करने होंगे। ऐसे परिवेश में उभरने वाली स्थानीय सभा को एक जीवंत समुदाय को बनाए रखने में मदद करने वाली उन गतिविधियों को प्रोत्साहित करने और सशक्त करने की अपनी जिम्मेदारी के बारे में भली भांति अवगत होने की संभावना है। यद्यपि, इसे अन्य बहु प्रकार की जिम्मेदारियों का निर्वहन करने में भी दक्षता प्राप्त करने की आवश्यकता होगी, और आपके सहायक मण्डल सदस्यों और उनके सहायकों द्वारा प्रदान की जाने वाली सहायता बेहद महत्वपूर्ण होगी। आपके 2010 के सम्मेलन के हमारे संदेश में, हमने ऐसी सभा के विकास पथ का वर्णन किया है, और हमने इसके कामकाज के विभिन्न आयामों का उल्लेख किया है, जिन पर ध्यान देने की आवश्यकता होगी, इसमें स्थानीय कोष के प्रबंधन और विकास की क्षमता और उचित समय पर, सामाजिक क्रिया की पहल का समर्थन करना और स्थानीय सरकार और नागरिक समाज की एजेंसियों के साथ सहभागिता करना शामिल है। ऐसी सभा द्वारा सेवा दिए जा रहे समुदाय को होने वाले लाभों के बारे में विस्तार से बताने की आवश्यकता नहीं है।

राष्ट्रीय आध्यात्मिक सभाओं और क्षेत्रीय बहाई परिषदों के साथ आपकी बातचीत में, हम चाहते हैं कि आप स्थानीय आध्यात्मिक सभाओं की स्थापना और उनके संचालन को मजबूत करने के मामले पर ध्यान लगाएँ, विशेषकर उन क्षेत्रों में जहां विकास के इस पहलू पर कम जोर दिया गया हो। हमें आशा है कि यह साल दर साल गठित स्थानीय सभाओं की संख्या में तेजी से वृद्धि में योगदान देगा। कुछ देशों में, आपके परामर्श में इस बात पर विचार करने की आवश्यकता होगी कि क्या ग्रामीण इलाकों में प्रत्येक स्थानीय क्षेत्र की सीमाओं को परिभाषित करने के लिए उपलब्ध व्यवस्थाएं पर्याप्त हैं।

एक प्रभावशाली अंतर्दृष्टि जो सामने आई है वह यह है कि एक समुदाय में स्थानीय सभा के पदस्थान और नेतृत्व को किस हद तक मान्यता दी जाती है, यह इस बात से संबंधित है कि अनुयायी सत्ता-प्रलोभन या सांसारिक प्रवृत्तियों के कलंक से पूरी तरह मुक्त वातावरण में चुनावी प्रक्रिया की पवित्रता और उसमें भाग लेने के अपने कर्तव्य को कितनी गहनता से लेते हैं। जैसे-जैसे समुदाय में बहाई चुनावों के आध्यात्मिक सिद्धांतों के बारे में जागरूकता पैदा होती है, एक नई अवधारणा बनती है कि किसी संस्था में सेवा करने के लिए किसी को बुलाए जाने का क्या अर्थ है, और यह समझ भी बढ़ती है कि कैसे व्यक्ति, समुदाय और स्थानीय सभा एवं उसकी एजेंसियां एक दूसरे से संबंधित हैं। जहां स्थानीय सभा के गठन और उसके उद्देश्य के बारे में एक समुदाय में वार्तालाप को प्रोत्साहित करने के लिए व्यवस्थित प्रयास किया जाता है, और साल-दर-साल उस वार्तालाप को बनाए रखने के लिए, निर्वाचित निकाय की शक्ति और सामुदायिक जीवन की गतिजता एक दूसरे को प्रबलित करते हैं।

यह पारस्परिक प्रभाव पिछले दो वर्षों में उन जगहों पर विशेष रूप से ध्यान देने योग्य है जहां हमने स्थानीय आध्यात्मिक सभा के लिए दो-चरणीय चुनावी प्रक्रिया को अपनाने को मंजूरी दी है, एक ऐसा तरीका जिसका प्रारंभ

'अब्दुल-बहा' द्वारा तेहरान की आध्यात्मिक सभा को दिए गए निर्देशों से होता है। इस अवधि के दौरान आठ देशों में फैली 22 स्थानीय सभाओं का चुनाव इस पद्धति से होना प्रारंभ हो गया है। कई स्वरूपों में एक राष्ट्रीय आध्यात्मिक सभा के चुनाव की भांति, इसमें एक स्थानीय क्षेत्र को इकाइयों में विभाजित करना शामिल है, जिनमें से प्रत्येक में से एक या अधिक प्रतिनिधि चुने जाते हैं, जिसके बाद प्रतिनिधि स्थानीय सभा के सदस्यों का चुनाव करते हैं। जैसे-जैसे किसी स्थानीय क्षेत्र में रहने वाले बहाइयों की संख्या बढ़ती जाती है और समुदाय की जटिलता प्रबंधन की क्षमता बढ़ती जाती है, दो चरणों वाली चुनावी प्रक्रिया को लागू करने का मामला उसी अनुपात में मजबूत होता जाता है। तद्नुसार, आने वाली योजना में, हम शहरी और ग्रामीण दोनों जगहों पर जहां स्थितियां इस तरह के कदम को अनुकूल बनाती हैं स्थानीय सभा के चुनाव के लिए इस पद्धति को अपनाने के लिए अधिकृत करने की आशा करते हैं।

एक स्थानीय आध्यात्मिक सभा यह सीखने में गहरी दिलचस्पी रखती है कि अपने अधिकार क्षेत्र के भीतर समुदाय-निर्माण कार्य को कैसे आगे बढ़ाया जाए, और इसके लिए यह क्लस्टर में समन्वय प्रयासों में शामिल मित्रों के साथ नियमित रूप से परामर्श करती है। यह स्थानीय क्षेत्र में सघन गतिविधि के किसी भी केंद्र के विकास का निकटता से ध्यान रखती है, विशेष रूप से वहां उभरी अनुयायियों के उन दलों को सहायता प्रदान करके जो विकास प्रक्रिया को बढ़ा रहे हैं। सामान्यतया, स्थानीय क्षेत्र के स्तर पर या इसके कुछ भागों में गतिविधियों की सघनता को जितनी अधिक संगठनात्मक व्यवस्था की आवश्यकता होती है- जैसे, गृह भ्रमण अभियान की व्यवस्था करना, प्रार्थना सभा आयोजित कर रहे परिवारों के साथ साथ चलना, या उन्हें एक साथ काम करने के लिए समूह बनाने हेतु प्रोत्साहित करना – उतनी ही अधिक विशिष्ट भूमिका स्थानीय सभा द्वारा निभाई जा सकती है। उन स्थानीय क्षेत्रों में जहां बहाई गतिविधियों के आलिंगन में बड़ी संख्या का स्वागत किया जा रहा है, और जहां एक सभा के काम की जटिलता और जिम्मेदारियां कई गुना बढ़ रही हैं, सभा को कभी-कभी पता चलता है कि इसके सचिव को एक कर्मचारी युक्त कार्यालय की आवश्यकता है, और समय के साथ, एक उपयुक्त स्थानीय बहाई केंद्र की आवश्यकता और अधिक जरूरी हो जाती है।

जैसे-जैसे स्थानीय सभाएं समुदाय के विकास के लिए जिम्मेदारी का अधिक से अधिक भाग उठाना प्रारंभ करती हैं, क्षेत्रीय और राष्ट्रीय स्तर पर संस्थानों को उनकी मदद करने के अपने प्रयासों में अवश्य ही अधिक व्यवस्थित होना चाहिए। हमें यह देखकर प्रसन्नता हुई है कि इस आवश्यकता को व्यवस्थित तरीके से संबोधित किया जा रहा है, उदाहरण के लिए, राष्ट्रीय सभाओं या क्षेत्रीय परिषदों द्वारा अनावृत होती विशिष्ट कार्य प्रणालियों के बारे में परामर्श करने के लिए सचिवों और स्थानीय सभाओं के अन्य अधिकारियों के साथ समय-समय पर बैठकें आयोजित करके।

जहां एक क्षेत्रीय परिषद ने एक साथ अनेक क्लस्टरों को उचित प्रकार की सहायता प्रदान करने की क्षमता सहित एक बढ़ी हुई प्रशासन योग्यता अर्जित की है, यह पूरे क्षेत्र की त्वरित प्रगति के लिए अनुकूल सिद्ध हुई है। आपके 2015 के सम्मेलन के लिए हमारे संदेश ने संकेत दिया था कि छोटे देशों में जहां क्षेत्रीय परिषदों की स्थापना की आवश्यकता नहीं है, राष्ट्रीय स्तर पर एक औपचारिक संरचना उभरने की आवश्यकता होगी, जिस पर क्लस्टरों को आगे बढ़ने में मदद करने का दायित्व होगा। हम चाहते हैं कि, उन देशों में जहां यह अभी तक नहीं हुआ है, तीन, पांच या सात सदस्यों वाली एक राष्ट्रीय विकास समिति को नियुक्त करने के लिए उठाए जा सकने वाले कदमों के बारे में राष्ट्रीय सभाओं से परामर्श करें। इस संबंध में क्षेत्रीय परिषदों के बारे में जो सीखा गया है, उससे प्रासंगिक अंतर्दृष्टि प्राप्त करते हुए, राष्ट्रीय सभा को इस एजेंसी को क्लस्टरों के अभिगमन को पोषित करने के लिए उपयुक्त छूट देने की आवश्यकता होगी। इसकी जिम्मेदारियों में क्षेत्रीय शिक्षण समितियों (क्लस्टर विकास समितियों) की नियुक्ति करना और उन्हें अपनी योजनाओं को

लागू करने में प्रोत्साहित करना, होमफ्रंट पायनियरों की तैनाती की व्यवस्था करना, शिक्षण परियोजनाओं का समर्थन करना और मूल साहित्य का वितरण शामिल हो सकता है। समिति को राष्ट्रीय सभा की एक एजेंसी- प्रशिक्षण संस्थान, और देश को सेवा दे रहे सहायक मण्डल सदस्यों के साथ सहयोग करने में सक्षम होने से लाभ होगा, और यह संबंधित सलाहकार के साथ सीधे संवाद कर सकेगी। जहां एक राष्ट्रीय सभा स्वाभाविक रूप से समिति के काम के साथ एक निरंतर परिचितता बनाए रखना चाहेगी और इसे मार्गदर्शन, समर्थन और प्रोत्साहन प्रदान करेगी, एक ऐसी संस्थागत इकाई का निर्माण जो विकास को बढ़ावा देने के लिए पूरी तरह से प्रयासरत हो, सभा को अन्य महत्वपूर्ण बिंदुओं पर अधिक ध्यान देने में सक्षम करेगी। जिन देशों में परिषदों का गठन नहीं किया गया है लेकिन अंततः स्थापित की जा सकती हैं, वहाँ भी वर्तमान में एक राष्ट्रीय विकास समिति नियुक्त की जानी चाहिए।

योजना को ईमानदारी से पूरा करने के प्रयासों से जैसे-जैसे आध्यात्मिक ऊर्जाएँ निर्मुक्त होती हैं, वे उन विरोधी ताकतों के प्रतिरोध का सामना करती हैं जो मानवता को पूर्ण परिपक्वता प्राप्त करने से रोकती हैं। ऐसी ताकतों के सामने, स्थानीय स्तर पर अपनाई जा रही विभिन्न कार्य प्रणालियो की जीवन शक्ति को संरक्षित और सशक्त करने की आवश्यकता है। यह महत्वपूर्ण जिम्मेदारी दोनों सहायक मंडलों के सदस्यों के लिए विशेष प्रासंगिकता की है, जिनके अनेक तथा मांग करती जिम्मेदारियाँ उन्हें जमीनी स्तर पर स्थितियों से निकटता से जोड़ती हैं और वे किसी भी उस चीज से सतर्क रहते हैं जो एक समुदाय की चेतना को प्रभावित कर सकती है। विभिन्न संस्कृतियों और सामाजिक परिवेशों में, उन्हें विभिन्न प्रकार की चुनौतियों का सामना करने के लिए मित्रों की सहायता करनी चाहिए: पूर्व में विरोधी रहे समूहों को एक समान लक्ष्य प्राप्त करने के प्रयास के माध्यम से एकता खोजने में मदद करना; मानवता की किशोरावस्था से संबंधित विरासत में मिले रीति-रिवाजों और दृष्टिकोणों को अलग रखना और सभी प्रकार के पूर्वाग्रहों को दूर करना सीखना; मामलों को निंदक या दोषों की दृष्टि से देखने की किसी भी प्रवृत्ति से सुरक्षित होना, और इसके बजाय एक उत्सुक और रचनात्मक दृष्टिकोण बनाए रखना; महिलाओं और पुरुषों की समानता को व्यवहार में लाना; व्यक्तिगत पहल के अभ्यास के माध्यम से जड़ता और उदासीनता को दूर करना; व्यक्तिगत पसंद की भावनाओं से पहले सामूहिक कार्रवाई के लिए योजनाओं का समर्थन करना; आधुनिक प्रौद्योगिकियों की शक्ति को उनके संभावित अकर्मण्यकारी प्रभावों के आगे झुके बिना उपयोग करना; प्रभुधर्म शिक्षण की मिठास और सांसारिक हितों से ऊपर मानव जाति की सेवा करने के आनंद का मूल्य समझना; उपभोक्तावाद के नशे को अस्वीकार करना; आक्रामक रूप से प्रचारित की जाती भौतिकवादी विचारधाराओं और विश्वदृष्टि से दूर रहना, और अपनी निगाह ईश्वर के नियम और सिद्धांत के उज्ज्वल प्रकाशस्तंभ पर केंद्रित करना। ये, और इसके अलावा और भी अनेक जिम्मेदारियों का एक समुच्चय निष्ठावानों के व्यवस्थित समूह के द्वारा उस समय पूरा करना है, जब वे मानवता के जीवन में उथल-पुथल वाले वर्षों को मार्गनिर्देशित कर रहे हैं। आपके सहायक, जिन्होंने समूहों द्वारा प्रवेश की प्रक्रिया को आगे बढ़ाने में श्रेय लेने से स्वयं को दूर कर लिया है, को ऐसी सभी चुनौतियों का, वे जहां तथा जब भी उत्पन्न हों, बराबरी से सामना करना चाहिए। अपने अच्छे उदाहरण की शक्ति और अपने स्पष्ट तथा अच्छे परामर्श के माध्यम से, वे मित्रों को सेवा के जीवन के प्रति आस्था, आश्वासन और प्रतिबद्धता में बढ़ने में मदद कर सकते हैं, और उनके साथ ऐसे समुदायों का निर्माण कर सकते हैं जो शांति के आश्रम हैं, ऐसे स्थान जहां एक परेशान और संघर्षग्रस्त मानवता को आश्रय मिल सकता है।

योजनाओं की पिछली श्रृंखला के दौरान, समुदाय की प्रभुधर्म की सबसे महत्वपूर्ण आवश्यकताओं पर ध्यान केंद्रित करने की क्षमता इसकी सबसे महत्वपूर्ण शक्तियों में से एक के रूप में उभरी। हालांकि, केन्द्रित रहने के इस बोध को कई

कार्यप्रणालियों को समायोजित करना पड़ता है, जिनमें से सभी को प्रतिस्पर्धा के बिना आगे बढ़ना चाहिए। इसके लिए एक विस्तारित दृष्टि, सह-अस्तित्व की अनिवार्यताओं की एक सूक्ष्म समझ, अतिरिक्त लचीलापन और उन्नत संस्थागत सहयोग की आवश्यकता है। हम जानते हैं कि प्रभुधर्म के संसाधन सीमित हैं, और व्यक्ति अपने समय पर कई मांगों का अनुभव करते हैं। लेकिन जैसे-जैसे योजना एक निश्चित स्थान पर अनावृत होती है और सेवा करने के इच्छुक लोगों में वृद्धि होती है, एक समृद्ध और जीवंत बहाई समुदाय के जीवन के विविध पहलू कदम दर आगे बढ़ते हैं, और प्रभुधर्म की समाज-निर्माण शक्ति चमक उठती है।

एक ऐतिहासिक मिशन

हम आशा करते हैं कि इन पृष्ठों में आप पर यह प्रभाव डाल पाये होंगे कि बहाई समुदाय की वर्तमान क्षमता ने, कार्य करने के लिए एक सुसंगत रूपरेखा के पालन के माध्यम से प्राप्त किए गए अनुशासन के साथ, इसे अपने सभी संसाधनों, आध्यात्मिक के साथ-साथ भौतिक, को व्यापक, कठोर परीक्षा के लिए तैयार किया है। जल्द ही शुरू होने वाली योजना- पच्चीस साल के पवित्र उद्यम में पहला प्रमुख उपक्रम, अपने दायरे और महत्व में पीढ़ियों पर प्रभाव डालने वाला, जो व्यक्तिगत अनुयायियों, समुदाय और संस्थानों से वैसी ही मांग करेगी जो संरक्षक द्वारा दस वर्षीय महाभियान के आरंभ में बहाई विश्व से की गई मांगो की याद दिलाएगी। यदि, सर्वशक्तिमान ईश्वर की कृपा से, मित्रों को वीरता की ऊंचाइयों तक जिस पर उन्हें अब पहुँचने का आह्वान किया जा रहा है, पहुंचने में सफल होते हैं, तो इतिहास निश्चित रूप से उनके कार्यों को इस प्रकार सम्मानित करेगा, जो रचनात्मक युग की प्रथम शताब्दी को सजाते भव्य कार्यों को दिये सम्मान से कम चमकदार नहीं होगा।

हम आप पर और राष्ट्रीय आध्यात्मिक सभाओं पर यह सुनिश्चित करने के लिए अत्यधिक निर्भर हैं कि इस सामूहिक उद्यम की प्रकृति के साथ दोस्तों को परिचित कराने के सभी प्रयासों में इतिहास के परिप्रेक्ष्य को पूरी तरह से ध्यान में रखा गया है। आज की सभ्यता, अपने सभी भौतिक कौशल के बावजूद, अभावग्रस्त पाई गई है, और सर्वोच्च कलम द्वारा निर्णय जारी किया गया है: "क्या आप नहीं जानते कि जो कुछ भी लोगों के पास है, हमने उसे समेट लिया है और इसके स्थान पर एक नयी व्यवस्था अनावृत की है?" संरक्षक के शब्दों में, दैवीय सभ्यता की स्थापना, "बहाई धर्म का प्राथमिक मिशन" है। इसे सबसे बुनियादी गुणों पर बनाया जाना है, जिनकी दुनिया को बहुत जरूरत है: एकता, विश्वासपात्रता, आपसी समर्थन, सहयोग, सहचर-भाव, निस्वार्थता, सत्य के प्रति प्रतिबद्धता, जिम्मेदारी की भावना, सीखने की प्यास, सर्वआलिंगंनकारी हृदय का प्रेम।

हम मानवता को उसके स्वामी के प्रेम से प्रकाशित देखने की कितनी लालसा रखते हैं; हम हर जिह्वा पर उसकी स्तुति सुनने के लिए कितने तरसते हैं। हमारी इच्छा की प्रबलता को जानने के बाद, आप उस भावना को जानते हैं जिसके साथ, जब हम परम पवित्र दहलीज पर अपना मस्तक रखते हैं, तो हम बहाउल्लाह से याचना करते हैं कि वे आपको, और उन सभी को, जो उनके अनमोल प्रभुधर्म को संजोते हैं, उनकी अकथनीय कृपा का और अधिक परिपूर्ण माध्यम बनाएं।

विश्व न्याय मंदिर